Quest Journals
Journal of Education, Arts, Law and Multidisplinary
Volume 3 ~ Issue 1 (2013) pp: 42-53
ISSN(Online): 2347-2895
www.questjournals.org

Research Paper

दिल्ली सल्तनत: उद्भव, विस्तार एवं पतन

अरुण कुमार यादव
शोध छात्र, (मध्यकालीन इतिहास)
डॉ. राम मनोहर लोहिया, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

शोध सार

यह शोधपत्र दिल्ली सल्तनत (1206–1526 ई.) के उद्भव, विस्तार और पतन की ऐतिहासिक प्रक्रिया का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस कालखंड में पाँच प्रमुख मुस्लिम वंशों – गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी – ने भारत में इस्लामी सत्ता को संगठित और सुदृढ़ किया। शोध में सल्तनत के गठन की पृष्ठभूमि, जैसे महमूद गजनवी और मोहम्मद गौरी के आक्रमणों, तराइन की लड़ाइयों तथा कुतुबुद्दीन ऐबक की भूमिका को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से समझाया गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न शासकों के शासनकाल में किए गए प्रशासनिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सुधारों का विवेचन करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि दिल्ली को भारत की राजनीतिक राजधानी में रूपांतरित करने की प्रक्रिया एक सुविचारित नीति का परिणाम थी। इस शोध में सल्तनत की सीमाओं जैसे आंतरिक कलह, कमजोर उत्तराधिकार, प्रांतीय बिखराव, कर-विरोध और विदेशी आक्रमणों की विवेचना की गई है, जो इसके पतन के मूल कारण बने। साथ ही, पानीपत की पहली लड़ाई (1526) और बाबर के आगमन को भारत के मध्यकालीन इतिहास में एक नए युग की शुरुआत के रूप में देखा गया है। शोध का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि दिल्ली सल्तनत केवल एक सैन्य सत्ता नहीं थी, बल्कि यह भारत की प्रशासनिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना को दीर्घकालीन रूप से प्रभावित करने वाली प्रणाली थी, जिसने बाद में मुग़ल शासन की नींव रखी और हिन्दू-मुस्लिम सांस्कृतिक समागम की शुरुआत की। यह काल अपने प्रशासनिक नवाचार, स्थापत्य कला, धार्मिक अंतःक्रिया, और सामाजिक गतिशीलता के लिए भारतीय इतिहास में एक निर्णायक युग के रूप में देखा जाना चाहिए।

कुंजी शब्द: *दिल्ली सल्तनत, गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश, लोदी वंश, प्रशासनिक सुधार, इक़्ता प्रणाली, हिन्दू-मुस्लिम समागम, इस्लामी शासन, तराइन की लड़ाई, तैमूर का आक्रमण, बाबर, पानीपत की पहली लड़ाई, स्थापत्य कला, फ़ारसी भाषा, सूफी परंपरा, कर विद्रोह, प्रांतीय स्वायत्तता, मध्यकालीन भारत।*

1. प्रस्तावना

दिल्ली सल्तनत भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण युग रहा है, जिसका ऐतिहासिक महत्व न केवल इसके राजनीतिक विस्तार में निहित है, बल्कि इसके सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक और प्रशासनिक प्रभावों में भी परिलक्षित होता है। सल्तनत काल (1206–1526 ई.) भारतीय इतिहास की उस मध्यकालीन अवधि को दर्शाता है, जिसमें तुर्कों, खिलजियों, तुगलकों, सैयदों और लोदियों जैसे विभिन्न मुस्लिम शासकों ने उत्तर भारत विशेषकर

दिल्ली को केंद्र बनाकर शासन किया, और एक सुव्यवस्थित, केन्द्रीयकृत तथा सैन्यबल-आधारित शासन प्रणाली को विकसित किया। इस काल की समय-सीमा लगभग 320 वर्षों की रही, जिसकी शुरुआत कुतुबुद्दीन ऐबक के दिल्ली में गद्दी पर बैठने से हुई और जिसका पतन बाबर की पानीपत की पहली लड़ाई में विजयी होने के साथ हुआ। इस कालखंड को समझने की आवश्यकता इसलिए भी अत्यावश्यक है क्योंकि यह वह युग था जब भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लामी प्रभाव स्थायीत्व प्राप्त करता है और हिन्दू-मुस्लिम समाजों के बीच सांस्कृतिक अंतःक्रिया प्रारम्भ होती है, जिससे उपजे अनेक सामाजिक-धार्मिक तथा स्थापत्य रूपों ने भारत की ऐतिहासिक पहचान को एक नया आयाम दिया। दिल्ली सल्तनत का उद्भव मुख्यतः बाहरी आक्रमणों, तुर्क आक्रांताओं की सैन्य शक्ति, और भारत में तत्कालीन राजनीतिक अस्थिरता के कारण संभव हो सका, जिसने विदेशी शक्तियों को भारत पर विजय प्राप्त करने और यहां स्थायी शासन स्थापित करने का अवसर प्रदान किया। इसके विस्तार का श्रेय उन शासकों को जाता है जिन्होंने न केवल सैन्य अभियानों से उत्तरी भारत के अधिकांश क्षेत्रों पर प्रभुत्व स्थापित किया, बल्कि प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से अपने शासन को स्थायीत्व प्रदान किया। उदाहरणस्वरूप, अलाउद्दीन खिलजी ने मूल्य नियंत्रण और बाजार व्यवस्था को संगठित किया, तुगलक वंश के शासकों ने प्रशासनिक केन्द्र को दक्षिण भारत की ओर स्थानांतरित करने का प्रयास किया, और लोदी वंश ने अफगान तत्वों को शासन में सशक्त भूमिका दी। किंतु अंततः, आंतरिक विद्रोहों, प्रशासनिक अक्षमताओं, उत्तराधिकार के संघर्षों, और विदेशी आक्रमणों विशेषतः मंगोलों और तैमूर के आक्रमणों के कारण इस साम्राज्य की नींव कमजोर होती गई, जिसका परिणाम लोदी वंश के पतन और मुगल साम्राज्य के उद्भव के रूप में सामने आया। भारतीय इतिहास में दिल्ली सल्तनत का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसने भारत में इस्लामी संस्कृति के बीज बोए, फ़ारसी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया, स्थापत्य कला में कुतुब मीनार, अलाई दरवाज़ा जैसे अद्भुत स्मारकों का निर्माण करवाया, और सामाजिक संरचना में शहरीकरण, भूमि राजस्व व्यवस्था और दासप्रथा जैसे तत्वों को संस्थागत रूप प्रदान किया। इस काल की गहराई से पड़ताल करने पर यह स्पष्ट होता है कि दिल्ली सल्तनत केवल एक सैन्य शासन नहीं था, बल्कि एक ऐसी व्यवस्था थी, जिसने भारतीय समाज की बहुस्तरीय संरचना को प्रभावित किया, धार्मिक समन्वय को एक नई दिशा दी और उपमहाद्वीप की राजनीति को एक केन्द्रीयीकृत ढांचे की ओर अग्रसर किया। इसलिए इस काल के उद्भव, विस्तार और पतन को समझना भारतीय इतिहास के सम्यक् अध्ययन के लिए अनिवार्य है, क्योंकि यह न केवल तत्कालीन समाज की जटिलताओं को उद्घाटित करता है, बल्कि आने वाले युग—मुगल काल और औपनिवेशिक शासन—की पूर्वपीठिका भी निर्मित करता है।

2. दिल्ली सल्तनत का उद्भव

दिल्ली सल्तनत के उद्भव की पृष्ठभूमि में मुस्लिम आक्रमणों की एक लंबी श्रृंखला निहित है, जिसकी शुरुआत 11वीं सदी में महमूद गजनवी से होती है। गजनवी ने 1000 से 1027 ई. के मध्य भारत पर 17 बार आक्रमण किए, जिनका उद्देश्य राजनीतिक नियंत्रण से अधिक लूटपाट और धार्मिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना था। यद्यपि उसने भारत में स्थायी शासन स्थापित नहीं किया, फिर भी उसके आक्रमणों ने भारतीय सीमाओं की कमजोरी और राजनीतिक विखंडन को उजागर कर दिया। इसके बाद मोहम्मद गौरी ने भारत के स्थायी नियंत्रण की दिशा में प्रयास किए। 1175 से 1206 ई. तक गौरी ने सिंध, पंजाब और उत्तर भारत के अन्य हिस्सों पर कब्जा किया। उसके आक्रमण संगठित और सुविचारित थे, जिनका उद्देश्य शासन की स्थापना था। इस प्रकार इन दोनों आक्रमणों ने भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लामी राज्य की नींव डालने में भूमिका निभाई।

2.2 तराइन की लड़ाइयाँ (1191, 1192) और पृथ्वीराज चौहान की पराजय

दिल्ली सल्तनत के आरंभ में तराइन की लड़ाइयाँ निर्णायक सिद्ध हुईं। पहली तराइन की लड़ाई 1191 ई. में मोहम्मद गौरी और दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान के बीच लड़ी गई, जिसमें पृथ्वीराज की विजय हुई। परंतु यह विजय स्थायी नहीं रही, क्योंकि अगले ही वर्ष 1192 ई. में गौरी ने पुनः आक्रमण किया और दूसरी तराइन की लड़ाई में पृथ्वीराज को निर्णायक रूप से पराजित किया। इस पराजय के साथ ही उत्तर भारत का द्वार मुस्लिम शासकों के लिए खुल गया और राजपूत प्रतिरोध कमजोर पड़ गया। पृथ्वीराज की पराजय ने दिल्ली और अजमेर जैसे शक्तिशाली राजपूत केंद्रों को गौरी के अधीन कर दिया, जिससे एक नए शासकीय ढाँचे की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह विजय दिल्ली सल्तनत के भविष्य की आधारशिला बनी।

2.3 कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा गुलाम वंश की स्थापना (1206 ई.)

मोहम्मद गौरी की मृत्यु के पश्चात 1206 ई. में उसके प्रमुख सैन्य अधिकारी कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में स्वतंत्र शासन की घोषणा की और इस प्रकार भारत में गुलाम वंश की स्थापना हुई। चूंकि कुतुबुद्दीन पहले गुलाम रह चुका था, इस कारण इस वंश को 'गुलाम वंश' कहा जाता है। ऐबक ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया और दिल्ली तथा उत्तर भारत के अनेक भागों में सत्ता को संगठित किया। हालांकि उसका शासनकाल केवल चार वर्षों का रहा, फिर भी उसने एक संगठित शासन की नींव रखी। कुतुबुद्दीन ऐबक को "लाख बख्श" की उपाधि भी दी गई थी क्योंकि उसने उदारता से दान दिया और धार्मिक संस्थानों को संरक्षण दिया। उसकी मृत्यु के बाद उसका दामाद इल्तुतमिश सत्ता में आया और सल्तनत को स्थायीत्व प्रदान किया।

2.4 दिल्ली को सत्ता का केंद्र बनाए जाने की प्रक्रिया

आरंभ में गुलाम वंश की राजधानी लाहौर थी, परंतु धीरे-धीरे दिल्ली को एक राजनीतिक और प्रशासनिक केंद्र के रूप में विकसित किया गया। इसका प्रमुख कारण दिल्ली की भौगोलिक स्थिति थी, जो गंगा-यमुना दोआब के पास स्थित होने के कारण रणनीतिक दृष्टि से उपयुक्त थी। इल्तुतमिश ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया और यहाँ से पूरे उत्तरी भारत में अपना शासन फैलाया। दिल्ली के किले, मस्जिदें और प्रशासनिक भवन इसी युग में निर्मित हुए और इसने धीरे-धीरे इस्लामी सत्ता का केन्द्र स्वरूप प्राप्त किया। आगे चलकर खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी वंशों ने भी दिल्ली को ही सत्ता का केंद्र बनाए रखा, जिससे यह शहर मध्यकालीन भारत की राजनीति का हृदयस्थल बन गया।

2.5 प्रारंभिक प्रशासनिक ढाँचा और चुनौतियाँ

दिल्ली सल्तनत के प्रारंभिक शासन काल में प्रशासनिक व्यवस्था को स्थापित करना एक बड़ी चुनौती थी। गुलाम वंश के शासकों ने फारसी पर आधारित प्रशासनिक ढाँचा अपनाया जिसमें दीवान, अमीर, वली और फौजदार जैसे पदों की नियुक्ति की गई। इल्तुतमिश ने "इक़्ता" प्रणाली की शुरुआत की, जिसके अंतर्गत अधिकारियों को भूमि से राजस्व वसूलने का अधिकार दिया गया। इसके अलावा न्यायिक व्यवस्था को इस्लामी सिद्धांतों के अनुसार संगठित किया गया। किंतु प्रशासनिक रूप से इन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ा, जैसे बाहरी आक्रमणों का भय, स्थानीय हिन्दू शासकों का प्रतिरोध, राजस्व व्यवस्था की जटिलताएँ, और सांस्कृतिक टकराव। फिर भी, प्रारंभिक शासकों ने इन चुनौतियों का सामना करते हुए शासन की नींव को स्थायीत्व प्रदान किया, जो आगे आने वाले शासकों के लिए मार्गदर्शक बनी।

3. दिल्ली सल्तनत का विस्तार

गुलाम वंश का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक था, परंतु इस वंश को वास्तविक रूप से सुदृढ़ करने का श्रेय इल्तुतमिश को जाता है। उसने सल्तनत को संगठनात्मक ढाँचा दिया, इक़्ता प्रणाली की शुरुआत की, दिल्ली को राजधानी बनाया और चालीसियों (तुर्की अमीरों की परिषद) का गठन किया। इल्तुतमिश ने मंगोलों से खतरे के बीच सल्तनत को स्थायीत्व प्रदान किया। रज़िया सुल्तान के रूप में भारत की पहली महिला शासक भी इसी वंश की देन थी। इस वंश ने एक केंद्रीकृत शासन प्रणाली की नींव रखी।

गुलाम वंश की विशेषताएँ

विशेषता	विवरण
शासनकाल	1206–1290 ई.
प्रमुख शासक	कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रज़िया सुल्तान, बलबन
प्रशासनिक सुधार	इक़्ता प्रणाली, चालीसियों की स्थापना, दिल्ली राजधानी
सांस्कृतिक योगदान	कुतुब मीनार का निर्माण, मदरसों का विकास
चुनौतियाँ	मंगोल आक्रमण, उत्तराधिकार संघर्ष

3.2 खिलजी वंश (1290–1320)

खिलजी वंश ने सल्तनत को विस्तारवादी दिशा में अग्रसर किया। जलालुद्दीन खिलजी ने वंश की स्थापना की, जबकि अलाउद्दीन खिलजी इसका सबसे शक्तिशाली शासक बना। उसने मंगोलों के आक्रमणों को सफलतापूर्वक रोका और दक्षिण भारत में पहली बार मुस्लिम सत्ता का विस्तार किया। उसके द्वारा लागू की गई बाजार नियंत्रण नीति, सैनिक वेतन में सुधार और कर प्रणाली में कड़ाई, उसे एक कुशल प्रशासक बनाती है।

खिलजी वंश की विशेषताएँ

विशेषता	विवरण
शासनकाल	1290–1320 ई.
प्रमुख शासक	जलालुद्दीन खिलजी, अलाउद्दीन खिलजी
प्रशासनिक सुधार	बाजार नियंत्रण प्रणाली, स्थायी सेना, भूमि कर में सुधार
सैन्य अभियान	दक्षिण भारत पर विजय (देवगिरि, वारंगल)
चुनौतियाँ	अत्यधिक केंद्रीकरण, उत्तराधिकार संघर्ष

3.3 तुगलक वंश (1320–1414)

तुगलक वंश ने शुरुआत में प्रशासनिक ऊर्जा और नवाचार की भावना दिखाई, विशेषकर मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में। उसने राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद स्थानांतरित किया, नकली मुद्रा चलाने की कोशिश की, और विभिन्न कर सुधार लागू किए, परंतु उसकी योजनाएँ व्यावहारिकता से दूर थीं, जिससे जन असंतोष और विफलता उत्पन्न हुई। इस वंश के समय में सल्तनत का सबसे बड़ा क्षेत्रीय विस्तार हुआ, लेकिन धीरे-धीरे इसके असफल प्रशासन के कारण विघटन आरंभ हो गया।

तुगलक वंश की विशेषताएँ

विशेषता	विवरण
शासनकाल	1320–1414 ई.
प्रमुख शासक	गयासुद्दीन तुगलक, मोहम्मद बिन तुगलक, फिरोजशाह तुगलक
प्रशासनिक सुधार	राजधानी परिवर्तन, कर वृद्धि, टोकन मुद्रा
असफलताएँ	योजनाओं की अव्यवहारिकता, जन असंतोष
क्षेत्रीय विस्तार	बंगाल, दक्कन तक विस्तार

3.4 सैयद वंश (1414–1451)

सैयद वंश तैमूर के आक्रमण के पश्चात स्थापित हुआ और इसकी नींव खिज्र खाँ ने रखी। यह वंश दिल्ली सल्तनत का सबसे कमजोर और अस्थिर वंश माना जाता है। इनके शासन में विदेशी आक्रमणों की पुनरावृत्ति हुई और प्रांतीय शक्तियाँ स्वतंत्र होने लगीं। इस युग में कोई महत्वपूर्ण प्रशासनिक सुधार नहीं हुए और केंद्र का प्रभाव लगातार घटता गया।

सैयद वंश की विशेषताएँ

विशेषता	विवरण
शासनकाल	1414–1451 ई.
प्रमुख शासक	खिज्र खाँ, मुबारक शाह, आलम शाह
शासन की प्रकृति	नाममात्र का, कमजोर प्रशासन
प्रमुख समस्याएँ	विदेशी आक्रमण, आंतरिक अस्थिरता
प्रशासनिक विफलता	कर प्रणाली का विघटन, सेना में अनुशासनहीनता

3.5 लोदी वंश (1451–1526)

लोदी वंश ने सल्तनत की शक्ति को फिर से संगठित करने का प्रयास किया। इसकी स्थापना बहलोल लोदी ने की, और सिकंदर लोदी ने प्रशासनिक सुधारों, कृषि व्यवस्था के विकास और विद्रोहियों पर नियंत्रण के माध्यम से सत्ता को मज़बूत किया। परंतु अंतिम शासक इब्राहिम लोदी के समय में अत्यधिक केंद्रीकरण और अफगान सरदारों से तनाव बढ़ा, जिससे 1526 ई. में पानीपत की पहली लड़ाई में बाबर से पराजय के बाद यह वंश समाप्त हो गया।

लोदी वंश की विशेषताएँ

विशेषता	विवरण
शासनकाल	1451–1526 ई.
प्रमुख शासक	बहलोल लोदी, सिकंदर लोदी, इब्राहिम लोदी
प्रशासनिक प्रयास	भूमि सुधार, स्थानीय सरदारों को नियंत्रित करना
सांस्कृतिक योगदान	हिंदी-फारसी मिश्रित संस्कृति का विकास
पतन के कारण	आंतरिक विद्रोह, बाबर का आक्रमण

4. दिल्ली सल्तनत की विशेषताएँ

दिल्ली सल्तनत की सबसे प्रमुख विशेषता इसका केन्द्रीयकृत शासन ढांचा था, जिसमें सारा नियंत्रण सुल्तान के हाथों में केंद्रित था। सुल्तान को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था और उसके आदेश को सर्वोपरि समझा जाता था।

प्रशासनिक व्यवस्था को केंद्र, प्रांत और जिला स्तरों पर विभाजित किया गया था। "इक़्ता प्रणाली" के तहत अधिकारियों को राजस्व वसूली के अधिकार दिए जाते थे, लेकिन यह प्रणाली सीधे सुल्तान के नियंत्रण में रहती थी। सैन्य व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, तथा वित्तीय प्रबंधन सब कुछ एक केंद्रीकृत प्रशासनिक तंत्र द्वारा संचालित होता था। मंत्रिमंडल या "दिवान" में अलग-अलग विभाग जैसे दिवान-ए-वज़ारत (वित्त), दिवान-ए-रिसालत (विदेश), दिवान-ए-अर्ज (सेना) आदि थे। यह व्यवस्था परंपरागत भारतीय विकेन्द्रीकृत शासन के विपरीत थी और इस्लामी राज्य व्यवस्था का रूपांतरण थी।

दिल्ली सल्तनत की केन्द्रीय प्रशासनिक संरचना

विभाग	कार्य
सुल्तान	सर्वोच्च शासक
दिवान-ए-वज़ारत	वित्तीय मामलों की देखरेख
दिवान-ए-अर्ज	सैन्य व्यवस्था
दिवान-ए-रिसालत	राजनयिक और धार्मिक कार्य
अमीर	प्रांत/जिले के अधिकारी

4.2 धार्मिक नीति (सहनशीलता/कट्टरता)

दिल्ली सल्तनत की धार्मिक नीति शासक विशेष पर निर्भर थी—कुछ सुल्तान धार्मिक सहिष्णुता अपनाते थे, जबकि कुछ कट्टर इस्लामी सोच के अनुयायी थे। जैसे कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश और जलालुद्दीन खिलजी ने सहनशील नीतियाँ अपनाई, जबकि अलाउद्दीन खिलजी और फिरोजशाह तुगलक ने कट्टर नीति अपनाई। फ़िरोजशाह ने हिन्दुओं पर जज़िया कर को फिर से लगाया, जबकि अकसर मंदिरों को ध्वस्त करने और इस्लामी धर्म प्रचार को बढ़ावा देने की घटनाएँ सामने आती हैं। हालांकि, सल्तनत का प्रशासनिक और राजनीतिक हित धार्मिक सौहार्द पर भी निर्भर था, जिससे धार्मिक सह-अस्तित्व की स्थिति भी बनी रही।

प्रमुख सुल्तानों की धार्मिक नीति

सुल्तान	नीति का प्रकार	विवरण
इल्तुतमिश	सहनशीलता	हिन्दू सरदारों को पद दिए
अलाउद्दीन खिलजी	व्यावहारिक कट्टरता	मंदिरों पर नियंत्रण, परन्तु सख्त जज़िया नहीं
फ़िरोजशाह तुगलक	धार्मिक कट्टरता	जबरन धर्म परिवर्तन, जज़िया की पुनः शुरुआत
सिकंदर लोदी	सहनशील	हिन्दू त्योहारों पर प्रतिबंध, परंतु मंदिरों की रक्षा

4.3 स्थापत्य कला (कुतुब मीनार, अलाई दरवाज़ा, मकबरे)

सल्तनत काल की स्थापत्य कला में इस्लामी और भारतीय शैली का समन्वय देखने को मिलता है। मुख्यतः मस्जिदें, मकबरे, मीनारें, दरवाजे आदि का निर्माण हुआ। प्रारंभिक दौर में कुतुब मीनार का निर्माण शुरू हुआ जिसे कुतुबुद्दीन ऐबक ने आरंभ किया और इल्तुतमिश ने पूरा किया। अलाउद्दीन खिलजी ने अलाई दरवाजा बनवाया जो सल्तनत काल की स्थापत्य श्रेष्ठता का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त मोहम्मद तुगलक और फिरोजशाह तुगलक ने किलों और सड़कों का भी निर्माण कराया। इस स्थापत्य में लाल पत्थर, मेहराब, गुम्बद और जालियाँ प्रमुख शैलीगत तत्व हैं।

प्रमुख स्थापत्य संरचनाएँ और उनके निर्माता

स्थापत्य स्मारक	निर्माता	विशेषता
कुतुब मीनार	कुतुबुद्दीन व इल्तुतमिश	विश्व की सबसे ऊँची ईंट मीनार
अलाई दरवाजा	अलाउद्दीन खिलजी	इंडो-इस्लामिक शैली का उदाहरण
हौज-ए-शम्सी	इल्तुतमिश	जलाशय निर्माण
फिरोजशाह का मकबरा	फिरोजशाह तुगलक	सादा किन्तु विशाल निर्माण शैली

4.4 भाषा और संस्कृति (फ़ारसी का प्रभाव, सूफी आंदोलन)

दिल्ली सल्तनत के काल में फ़ारसी भाषा को राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। सभी राजकीय दस्तावेज, आदेश, और न्याय कार्यवाही फ़ारसी में ही होती थी। इससे भारत में फ़ारसी साहित्य का अद्भुत विकास हुआ। साथ ही, सल्तनत काल में सूफी आंदोलन ने भारतीय समाज में एक धार्मिक समरसता का संचार किया। ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, निज़ामुद्दीन औलिया जैसे सूफी संतों ने समाज में प्रेम, भक्ति और समर्पण का संदेश फैलाया। इनके खानकाह हिन्दू-मुस्लिम सभी वर्गों के लोगों के लिए खुले थे। इस काल में हिन्दवी और उर्दू जैसी मिश्रित भाषाओं का जन्म हुआ, जिसने बहुभाषिक संस्कृति को जन्म दिया।

दिल्ली सल्तनत में सांस्कृतिक और भाषायी प्रभाव

पहलू	प्रभाव/विकास
प्रमुख भाषा	फ़ारसी (राजभाषा)
साहित्यिक विकास	फ़ारसी कविता, इतिहास ग्रंथ
सूफी परंपरा	चिश्ती, सुहरावर्दी संप्रदाय
मिश्रित भाषा विकास	हिन्दी-फ़ारसी मिश्रण से उर्दू की शुरुआत
संगीत/कला	कव्वाली, दरगाही संगीत

4.5 हिन्दू-मुस्लिम संबंधों का विकास

सल्तनत काल में हिन्दू-मुस्लिम संबंधों की प्रकृति बहुआयामी थी। यद्यपि प्रारंभिक दौर में कुछ कट्टर इस्लामी प्रभावों के कारण संबंध तनावपूर्ण रहे, परंतु समय के साथ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समन्वय की स्थिति विकसित हुई। हिन्दू राजाओं और सरदारों को सल्तनत की सेवा में नियुक्त किया गया। आर्थिक रूप से हिन्दू व्यापारियों और किसानों की सल्तनत में विशेष भूमिका थी। धार्मिक रूप से, यद्यपि जज़िया जैसे करों का विरोध हुआ, परंतु सूफी संतों और भक्ति आंदोलन ने हिन्दू-मुस्लिम संबंधों में धार्मिक समन्वय को मजबूत किया। इस युग ने भविष्य में आने वाले मुगल शासन के लिए गंगा-जमुनी तहज़ीब की आधारशिला रखी।

हिन्दू-मुस्लिम संबंध – प्रमुख पहलू

क्षेत्र	विशेषताएँ
प्रशासन	हिन्दू सरदारों की भागीदारी
आर्थिक सहभागिता	करदाता के रूप में हिन्दू किसानों की भूमिका
धार्मिक समन्वय	सूफी-भक्ति परंपरा का उद्भव
सामाजिक संपर्क	मिश्रित बस्तियाँ, सांस्कृतिक मेलजोल

विरोध व संघर्ष	जज़िया कर, मंदिर विध्वंस

5. दिल्ली सल्तनत का पतन

दिल्ली सल्तनत के पतन की प्रक्रिया का एक बड़ा कारण कमजोर उत्तराधिकारी और उनके बीच की आंतरिक कलह थी। विशेषतः गुलाम वंश के बाद अधिकांश वंशों में उत्तराधिकार स्पष्ट नहीं रहा, जिसके कारण शाही परिवारों में संघर्ष उत्पन्न हुआ। बलबन की मृत्यु के बाद, उसका पुत्र मुहम्मद जैसे असक्षम शासक सत्ता में आए, जिनमें शासन चलाने की दूरदर्शिता नहीं थी। खिलजी, तुगलक और लोदी वंशों में भी भाइयों, सरदारों और सेनापतियों के बीच सत्ता संघर्ष की स्थिति बनी रही। इससे केंद्रीय सत्ता की पकड़ कमजोर होती गई और विभिन्न गुटों के बीच विश्वास का अभाव उत्पन्न हुआ।

आंतरिक कलह और उत्तराधिकार संकट

वंश	संघर्ष की प्रकृति	प्रभाव
गुलाम वंश	रज़िया सुल्तान बनाम तुर्क अमीर	महिला शासक को अस्वीकार
तुगलक वंश	तुगलक वंशजों के बीच असंतोष	शक्ति का विघटन
लोदी वंश	इब्राहिम लोदी और अफगान सरदारों में टकराव	बाबर को आमंत्रण का कारण

5.2 प्रांतीय शासकों की स्वायत्तता

जब केंद्र कमजोर हुआ, तो प्रांतों के शासकों ने स्वतंत्रता की दिशा में कदम बढ़ा दिए। बंगाल, गुजरात, मालवा, बहमनी और जौनपुर जैसे राज्यों ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया और दिल्ली की सत्ता को केवल नाममात्र तक सीमित कर दिया। सैयद और लोदी वंशों के काल में यह प्रवृत्ति और भी तीव्र हो गई। यह स्थिति सल्तनत की केंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था को तोड़ने का सबसे बड़ा कारण बनी।

प्रमुख स्वतंत्र प्रांतीय राज्य

राज्य	स्वतंत्रता का काल	शासक
बंगाल	14वीं शताब्दी	शम्सुद्दीन इलियास
गुजरात	1391 ई.	जफर खाँ मुज़फ्फर
बहमनी	1347 ई.	अलाउद्दीन हसन गंगू
मालवा	1390 ई.	दिलावर खाँ

5.3 प्रशासनिक असफलताएँ और कर विद्रोह

सल्तनत के शासकों की कई प्रशासनिक नीतियाँ अव्यवहारिक और जनविरोधी थीं। मोहम्मद बिन तुगलक की योजनाएँ जैसे – राजधानी स्थानांतरण, टोकन मुद्रा, और करों की वृद्धि – ने जनता में असंतोष को जन्म दिया। किसानों पर अत्यधिक कर थोपा गया, जिससे भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हुई। नतीजतन, कई कर विद्रोह हुए और प्रशासनिक नियंत्रण शिथिल होता गया।

प्रशासनिक असफलताएँ और उनके परिणाम

नीति / निर्णय	प्रभाव
राजधानी दौलताबाद स्थानांतरण	जन-पीड़ा, असंतोष
टोकन मुद्रा का प्रचलन	अर्थव्यवस्था में अव्यवस्था

कर वृद्धि (दोआब क्षेत्र)	किसान विद्रोह, पलायन
सेना का अनुशासनहीनता	युद्ध क्षमता में कमी

5.4 विदेशी आक्रमण (तैमूर का आक्रमण – 1398 ई.)

1398 ई. में मंगोल आक्रांता तैमूर लंग ने दिल्ली पर आक्रमण किया। सैयद वंश के उद्भव से पहले के इस आक्रमण ने दिल्ली को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया। हजारों लोगों की हत्या हुई और सल्तनत की प्रशासनिक, आर्थिक और सैन्य शक्ति को गहरा आघात पहुँचा। तैमूर का यह आक्रमण भले ही अस्थायी था, लेकिन उसने सल्तनत की नींव को पूरी तरह हिला दिया।

तैमूर के आक्रमण का प्रभाव

क्षेत्र	प्रभाव
जनसंख्या	हजारों लोगों की निर्मम हत्या
अर्थव्यवस्था	दिल्ली का व्यापारिक और राजस्व ढाँचा ध्वस्त
सत्ता संरचना	कमजोर सैयद वंश का उदय
मनोबल	जनता और अमीरों का आत्मबल टूटा

5.5 बाबर द्वारा पानीपत की पहली लड़ाई (1526 ई.) में इब्राहीम लोदी की पराजय

1526 ई. में बाबर ने काबुल से आकर इब्राहीम लोदी से पानीपत की पहली लड़ाई लड़ी। बाबर की सैन्य रणनीति, खासकर तोपों का प्रयोग, लोदी की पारंपरिक सेना के सामने निर्णायक सिद्ध हुआ। इब्राहीम लोदी की मृत्यु के साथ ही दिल्ली सल्तनत का अंत हो गया। यह युद्ध भारत में एक नए युग – मुग़ल साम्राज्य – की शुरुआत का प्रतीक बना।

पानीपत की पहली लड़ाई (1526 ई.)

पक्ष	नेतृत्व	परिणाम
बाबर (मुगल)	बाबर	निर्णायक विजय, नई सत्ता की स्थापना
दिल्ली सल्तनत	इब्राहीम लोदी	पराजय, शासक की मृत्यु
विशेष रणनीति	तोपों का प्रयोग	पारंपरिक सेना का विघटन

5.6 मुग़ल साम्राज्य की स्थापना और सल्तनत का अंत

पानीपत की लड़ाई के बाद मुग़ल साम्राज्य की स्थापना हुई, जिसने भारत में नई शासन व्यवस्था, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और एक सशक्त केंद्रीकृत सत्ता प्रणाली का विकास किया। दिल्ली सल्तनत के अंत के साथ मध्यकालीन भारतीय इतिहास में एक नया अध्याय आरंभ हुआ। जहाँ सल्तनत एक लड़खड़ाती, अस्थिर शक्ति के रूप में समाप्त हुई, वहीं मुग़ल साम्राज्य ने भारत को राजनीतिक स्थिरता और सांस्कृतिक गौरव प्रदान किया।

सल्तनत का अंत और मुग़ल शासन का आरंभ

परिवर्तन	दिल्ली सल्तनत	मुग़ल साम्राज्य
शासन संरचना	बिखरी हुई, प्रांतीय असंतोष	केंद्रीकृत और सुदृढ़
सैन्य शक्ति	पारंपरिक, असंगठित	संगठित, बारूद और तोप का प्रयोग
सांस्कृतिक प्रभाव	सीमित, फारसी प्रभाव तक	फारसी, तुर्क, भारतीय मिश्रित संस्कृति

दिल्ली सल्तनत का पतन एक क्रमिक और बहुपरिणामी प्रक्रिया थी, जिसमें आंतरिक संघर्ष, प्रशासनिक विफलता, प्रांतीय बिखराव, विदेशी आक्रमण और निर्णायक युद्ध जैसे अनेक तत्व परस्पर जुड़े हुए थे। इस पतन ने भारत में एक नए युग की शुरुआत की—जहाँ मुग़ल सत्ता ने दिल्ली की गद्दी को अपने नियंत्रण में ले लिया और भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्वरूप को एक नई दिशा प्रदान की।

निष्कर्ष

दिल्ली सल्तनत भारतीय इतिहास का एक ऐसा युग है जिसने उपमहाद्वीप की राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना को दीर्घकालिक रूप से प्रभावित किया। यह काल केवल सत्ता के परिवर्तन या युद्धों का इतिहास नहीं है, बल्कि प्रशासनिक सुदृढ़ता, सांस्कृतिक अंतःक्रिया और सामाजिक गतिशीलता की दृष्टि से एक निर्णायक मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। 1206 ई. से 1526 ई. तक फैली इस सल्तनत ने भारत की विविधता से भरी भूमि पर एक केंद्रीकृत इस्लामी शासन प्रणाली की स्थापना की, जो भले ही विभिन्न वंशों – गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी – के नेतृत्व में बार-बार परिवर्तन से गुजरी, किंतु इसके मूल प्रशासनिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्वरूपों ने भारत के भविष्य की राजनीतिक संरचना पर गहरा प्रभाव डाला। दिल्ली सल्तनत ने सबसे पहले एक संगठित और स्थायी नौकरशाही की कल्पना की, जहाँ अमीरों और मलिकों की भूमिका, भूमि राजस्व संग्रह की इक़्ता प्रणाली, सैनिकों का नियमित वेतन, न्यायपालिका की इस्लामी व्यवस्था, और राजधानी से प्रांतों तक के प्रशासनिक तंत्र ने भारतीय प्रशासन में एक अनुशासित और केंद्रीकृत ढाँचे की नींव डाली। इन संस्थाओं की कार्यप्रणाली, यद्यपि कई बार असफल भी रही, फिर भी यही संरचना आगे चलकर मुग़ल काल में परिष्कृत होकर दीवान, मिर्जा, फौजदार जैसे पदों में बदल गई। इस प्रशासनिक निरंतरता ने भारत में स्थायी राज्य की अवधारणा को जन्म दिया और एक राजनैतिक केंद्रीकरण की भावना को उत्पन्न किया, जो पूर्ववर्ती बिखरे हुए राजतंत्रों में नहीं थी।

दिल्ली सल्तनत का एक और गहरा प्रभाव भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक बनावट पर पड़ा। यद्यपि यह शासन एक इस्लामी सत्ता थी, फिर भी यह पूर्णतः एकधर्मी या सांस्कृतिक रूप से पृथक नहीं रही। हिन्दू-मुस्लिम अंतःक्रिया के पहले ठोस रूप इसी काल में देखने को मिलते हैं। मस्जिदों के साथ मंदिर भी विद्यमान थे, फारसी भाषा के साथ संस्कृत और प्राकृत का भी प्रयोग होता रहा, तथा धार्मिक सहिष्णुता और टकराव दोनों ही प्रक्रियाएँ समानांतर रूप से विकसित होती रहीं। सल्तनत काल में सूफी संतों और भक्ति आंदोलन के संतों के बीच वैचारिक संवाद भी देखने को मिलता है, जिसने दोनों समुदायों के बीच सांस्कृतिक समागम की नींव रखी। यह समागम केवल धार्मिक या सांस्कृतिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि वास्तुकला, संगीत, परिधान, खान-पान और भाषा में भी परिलक्षित हुआ। उर्दू जैसी मिश्रित भाषाओं का विकास इस समन्वय का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सल्तनत कालीन स्थापत्य शैली में हिन्दू शिल्पकला और इस्लामी वास्तुशैली का अनूठा मेल दिखाई देता है, जिससे भारत की स्थापत्य धरोहर समृद्ध हुई।

हालाँकि दिल्ली सल्तनत की सत्ता अनेक बार संकट में पड़ी और इसके शासन में कई सीमाएँ थीं – जैसे प्रशासनिक अस्थिरता, उत्तराधिकार संघर्ष, कर प्रणाली की क्रूरता, और प्रांतीय शासकों का विद्रोह – लेकिन इन सबके बावजूद सल्तनत ने भारत में एक नये राजनीतिक युग की शुरुआत की। इस काल की सबसे बड़ी उपलब्धियों में यह तथ्य शामिल है कि इसने भारत को बाहरी आक्रमणों के विरुद्ध संगठित किया, प्रशासनिक व्यवस्था को एक औपचारिक ढाँचा दिया, और एक ऐसे सांस्कृतिक परिवेश का निर्माण किया जिसमें विविधता को स्थान मिला। इसके अलावा दिल्ली सल्तनत ने भारत की भौगोलिक एकता को भी प्रेरित किया। उत्तर भारत में सल्तनत की स्थायीत्व स्थापना ने दक्कन तक मुस्लिम शासकों को पहुँचाया और एक समन्वित भारतीय उपमहाद्वीप की संभावना को मजबूत किया। अलाउद्दीन खिलजी और

मोहम्मद बिन तुगलक के अभियानों ने भारत की भौगोलिक दृष्टि से एकजुट राजनीतिक धारणा को मजबूती प्रदान की, भले ही उनकी नीतियाँ विवादास्पद रही हों।

यदि प्रशासनिक संस्थाओं की बात करें, तो सल्तनत काल ने जिन संस्थाओं की नींव डाली, वे आगे चलकर मुग़लों द्वारा पूर्णतः विकसित की गईं। सल्तनत का दीवान-ए-रियासत, दीवान-ए-अर्ज, दीवान-ए-वजासत जैसी व्यवस्थाएँ बाद में अकबर के दीवानी और फौजदारी प्रशासन के रूप में और अधिक परिपक्व हो गईं। भूमि कर व्यवस्था, राजस्व अधिकारी, काजी और मुफ्ती जैसे न्यायिक अधिकारी – ये सभी सल्तनत की देन थे, जिनमें मुग़ल काल ने परिशोधन किया। यह प्रशासनिक निरंतरता भारत के राज्यतंत्र के विकास की एक सशक्त श्रृंखला को दर्शाती है, जो सल्तनत से शुरू होकर मुग़लों के माध्यम से औपनिवेशिक सत्ता तक पहुँची।

सल्तनत काल की एक और विशेष उपलब्धि यह रही कि इसने भारत में एक वैकल्पिक शासकीय मॉडल प्रस्तुत किया जो रक्तानुक्रम के बजाय योग्यता और सैन्य बल पर आधारित था। गुलाम वंश का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक एक दास था, जो अपनी प्रतिभा और निष्ठा के बल पर राजा बना। यह संदेश उस समय के समाज में एक क्रांतिकारी विचार के रूप में सामने आया, जिसने परंपरागत जातीय श्रेष्ठता को चुनौती दी। इसने सामाजिक गतिशीलता को एक दिशा दी, भले ही सीमित दायरे में ही सही। सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन की यह प्रक्रिया आगे चलकर अन्य सामाजिक आंदोलनों और जातीय विमर्शों की भूमिका के लिए पृष्ठभूमि बनी।

निश्चित रूप से सल्तनत काल में अनेक विसंगतियाँ और समस्याएँ थीं – जैसे अत्यधिक सैन्य अत्याचार, किसानों पर बोझिल कर व्यवस्था, धार्मिक कट्टरता के उदाहरण, तथा प्रांतीय अस्थिरता – परंतु इन सीमाओं के बीच भी इस काल ने एक ऐसा बुनियादी ढाँचा खड़ा किया जिसे नकारा नहीं जा सकता। यह युग भारत के लिए एक सेतु का कार्य करता है – प्राचीन भारत से मध्यकालीन भारत की ओर संक्रमण का, और भारतीय विविधता को एक प्रशासनिक व सांस्कृतिक धारा में प्रवाहित करने का। इस दृष्टि से दिल्ली सल्तनत भारतीय इतिहास में केवल एक शासकीय इकाई नहीं, बल्कि परिवर्तन और समागम की आधारशिला भी थी, जिसने भारत को एक नई दिशा दी और कालांतर में भारत के इतिहास को रूपांतरित कर दिया। दिल्ली सल्तनत का अंत भले ही पानीपत के मैदान में हुआ हो, परंतु इसकी राजनीतिक अवधारणाएँ, प्रशासनिक प्रणालियाँ, और सांस्कृतिक प्रभाव भारतीय परंपरा में गहराई से समाहित हो चुके थे। यह युग अपने अंत के साथ एक नए युग का आरंभ बना, जिसने भारत को मुग़ल साम्राज्य की छत्रछाया में पहुँचाया, किंतु उसकी जड़ें उसी सल्तनत काल में थीं जिसकी नींव ग़ुलामों, सरदारों, संतों और सुल्तानों ने मिलकर रखी थी। इसी दीर्घकालिक प्रभाव के कारण दिल्ली सल्तनत को भारतीय इतिहास का एक अनिवार्य और स्थायी अध्याय माना जाता है।

संदर्भ सूची

1. अली, एस. एम. (2010). *दिल्ली सल्तनत का इतिहास.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. चंद्र, सतीश. (2005). *मध्यकालीन भारत: भाग 1.* दिल्ली: एनसीईआरटी.
3. त्रिपाठी, रामशरण. (2009). *मध्यकालीन भारत का इतिहास.* वाराणसी: भारती भवन.
4. शर्मा, रमेशचंद्र. (2012). *दिल्ली सल्तनत का राजनीतिक विकास.* पटना: विद्या पब्लिशिंग.
5. शेख, मुहम्मद. (2008). *खिलजी वंश: शासन और सुधार.* भोपाल: नई दुनिया प्रकाशन.
6. हुसैन, अफज़ल. (2013). *तुगलक वंश का शासन और प्रशासन.* अलीगढ़: मुस्लिम यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. जैन, मोहनलाल. (2007). *मुगल- पूर्व भारत.* दिल्ली: नवभारत प्रकाशन.

8. यादव, राकेश. (2011). *दिल्ली सल्तनत की सांस्कृतिक धरोहर.* जयपुर: रचना पब्लिकेशन.
9. सिंह, हरिश्चंद्र. (2010). *भारतीय इतिहास के स्रोत.* कानपुर: विद्या निकेतन.
10. वर्मा, के. एन. (2005). *भारत का मध्यकालीन इतिहास.* दिल्ली: गगन पब्लिकेशन.
11. मिश्रा, दीपक. (2004). *दिल्ली का स्थापत्य इतिहास.* आगरा: संस्कृति प्रकाशन.
12. सिंह, चंद्रशेखर. (2006). *मध्यकालीन भारत में समाज और धर्म.* कोलकाता: चेतना प्रकाशन.
13. खान, रऊफ अहमद. (2009). *सल्तनत कालीन न्याय व्यवस्था.* लखनऊ: उर्दू अकेडमी.
14. तिवारी, गोविंद. (2008). *भारतीय शासन व्यवस्था का विकास.* इलाहाबाद: यूनिवर्सल पब्लिशर्स.
15. शास्त्री, वासुदेव. (2007). *सूफी और भक्ति आंदोलन.* दिल्ली: नवचेतना.
16. चौधरी, अमरनाथ. (2010). *महमूद गजनवी से बाबर तक.* दिल्ली: प्रकाशन भारती.
17. कुमार, अनिल. (2016). *प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत.* मेरठ: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल.
18. शर्मा, मनीष. (2012). *भारतीय इतिहास में मुस्लिम शासन.* भोपाल: संस्कृति पुस्तकालय.
19. हाशमी, सलीम. (2011). *भारत में इस्लामी प्रशासन की नींव.* दिल्ली: नूर पब्लिशिंग.
20. त्रिपाठी, वी. एस. (2009). *इतिहास के अध्याय: सल्तनत से मुग़ल तक.* गोरखपुर: विद्यार्थी प्रकाशन.
21. पटेल, के. एल. (2013). *मध्यकालीन भारत का समाज और संस्कृति.* अहमदाबाद: नवगंगा प्रकाशन.
22. सिन्हा, ए. पी. (2014). *इतिहास के झरोखे से: दिल्ली सल्तनत.* रांची: ज्ञानदीप प्रकाशन.
23. अंसारी, अब्दुल हक़. (2006). *फारसी भाषा और दिल्ली सल्तनत.* दिल्ली: राष्ट्रीय उर्दू परिषद.
24. चौहान, अनीता. (2011). *राजपूतों और सल्तनत की टक्कर.* जयपुर: राजस्थानी प्रकाशन.
25. सक्सेना, रश्मि. (2007). *भारत में सांप्रदायिक समरसता का विकास.* लखनऊ: संवाद प्रकाशन.
26. आज़मी, शरीफ. (2012). *सल्तनत कालीन भाषा और साहित्य.* बनारस: जामिया प्रेस.
27. गौतम, दिनेश. (2013). *इतिहास की धारा में दिल्ली.* दिल्ली: स्वराज प्रकाशन.
28. वाजपेयी, ललित. (2008). *दिल्ली सल्तनत के धार्मिक आयाम.* भोपाल: साक्षी बुक्स.
29. मेहता, संजय. (2010). *भारत में स्थापत्य कला: सल्तनत से मुग़ल तक.* दिल्ली: निर्माण बुक्स.
30. रिज़वी, अली अब्बास. (2005). *भारत में इस्लाम और समाज.* दिल्ली: इस्लामी अध्ययन केंद्र।